राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 246
एक दिन की
मौत
मुफ्त
ध्रुव का
एक पोस्टर
सुपरकमांडो
ध्रुव

एक दिन की मौत

सुपर कमांडो ध्रुव

कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा

संपादन : मनीष चंद्र गुप्त

इस शैतानी षड्यंत्र की शुरूआत कुछ दिन पहले 'राजनगर सेंट्रल जेल' की एक कोठरी से हुई थी—
काल कोठरी से!
जिसमें फांसी की सजा का इंतजार कर रहा था, एक खतरनाक और खूंखार हत्यारा— भुजंग!
जिसकी कोठरी पर चौबीसों घंटे कड़ा पहरा रहता था—
आप लोगों की चाय, साब!
लाओ, यार, लाओ।
इस समय तो इसकी बड़ी सख्त जरूरत थी।
जब से तूने कैंटीन का 'कॉन्ट्रैक्ट' लिया है, बीजू, तबसे बढ़िया और सस्ती चाय मिलती है।... सुड़क्...
लेकिन चाय की एक चुस्की मारते ही दोनों...
...स्टूल से जमीन पर आ गिरे—
हाहाहा हा!
आ हा हा हा!
अब बढ़िया और सस्ती चाय का मजा सपनों में लेना, हवलदारो!
काल-कोठरी के ताले में एक चाबी घूमी—
क्लिक
तुम्हारी सजा खत्म हुई, भुजंग! हम तुम्हारी आजादी का फर्मान लाए हैं। चलो।
कौन हो तुम?
बेकार के सवाल पूछकर, समय मत खराब करो।
चाय में मिली बेहोशी की दवा का असर सिर्फ एक घंटे तक रहेगा।
अब जल्दी से इस हवलदार की वर्दी पहनो और चलो!

और अगली सुबह–
तुम सब निकम्मे हो। गधे, मूर्ख कहीं के!
एक अदना सा कैंटीन वाला, तुमको बेहोशी की दवा मिली चाय पिला कर, भुजंग को ले भागा, और तुम सब सोते रहे?
जाओ, और उसको जाकर ढूंढो।
अगर भुजंग चौबीस घंटे के अंदर यहां नहीं आया, तो मैं तुम सबको लाइन हाजिर कर दूंगा।
लेकिन–
...अब तो चौबीस क्या, 'चौबीस सौ घंटे' हो चुके हैं, यानि तीन महीने से ऊपर।...
लेकिन अब तक न तो भुजंग का कुछ पता चला, और न ही कैंटीन वाले का।
पर भुजंग को जेल से निकाला किसने? भुजंग के सारे आदमी या तो मारे जा चुके हैं, या फिर जेल में बंद हैं।
यही सवाल तो मुझे भी परेशान कर रहा है --कि आखिर वह आदमी कौन है?
लेकिन इसी दौरान- किसी अंजान स्थान पर–
एक अजीब प्रयोग किया जा रहा था–
रेडी! अब काउंट-डाउन शुरू होता है।
दस।...नौ। ...आठ।...
सात।...छः। ...पांच।...चार।..
तीन।... दो।...एक।...
जीरो!
पूरे हॉल में एक कंपन गूंजने लगा। कई रंगों की रोशनियां जलने-बुझने लगीं–
हममम
शीशे के कैप्सूल में भरा नाइट्रोजन का द्रव उबलने लगा।
और फिर एक झटके से सब शांत हो गया–
पूरे हॉल में गहरा सन्नाटा छा गया।

लेकिन सिर्फ पल भर के लिए–
क्योंकि अगले ही पल पूरा वातावरण एक कान फाड़ देने वाले धमाके से गूंज उठा–
कड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़
साथ ही साथ पूरे हॉल में तालियों का तड़तड़ाहट फैल गई–
कमाल है!
इतना शक्तिशाली!
एक वार में बुलेटप्रूफ शीशा तोड़ दिया!!?
शाबास, कार्लो! ...यह 'भुजंग' मेरे काम का है। तुमने मेरी सालों की इच्छा पूरी कर दी।
अब यह आपका गुलाम है, मास्टर!
लेकिन, मास्टर, आपने इस काम के लिए भुजंग को ही क्यों चुना? यह काम तो कोई भी...
तुम नहीं समझोगे, कार्लो! भुजंग फांसी की सज़ा पाया एक मुजरिम है। अगर कुछ गड़बड़ हो भी गई, तो फांसी की सज़ा पाए मुजरिम के बयान पर कोई यकीन नहीं करेगा।
और अगर उसकी लाश पुलिस को कभी मिली, तो कोई ज्यादा छानबीन भी नहीं करेगा।
अब मेरे प्रतिशोध की शुरूआत होती है। तुम जाओ और जाकर सुंग को मेरे पास भेजो।
और तुम भुजंग के साथ भारत जाने की तैयारी करो।

राजनगर में हमेशा की तरह ही जिंदगी, हलचल से भरी हुई थी–
खासतौर से शहर के सब से बदनाम इलाके 'मानवाड़ा' में–
लेकिन जल्दी ही यह हलचल, तूफान में बदलने वाली थी–
य–यह तो भुजंग है।
यह यहां क्यों आया है?
इसकी हिम्मत तो देखो। खुलेआम घूम रहा है।
भुजंग!? जिसकी तलाश में पुलिस देश का कोना-कोना छान रही है!! इसकी खबर देने पर तो कुछ इनाम-शिनाम जरूर मिलेगा।
...हैलो! हां, इंस्पेक्टर साहब, मैं आपका पुराना मुखबिर शंभू हूं। — हां! ... भुजंग यहां मानवाड़ा में घूम रहा है। —
आप जल्दी यहां...आ!!!!!
छपाक
पुलिस का कुत्ता! मेरे आने-जाने की खबर पुलिस को देता है?
खैर! पुलिस का तो मुझे खुद भी इंतजार है।
अब ध्यान से देखिए, मास्टर! 'टेस्टिंग' शुरू होने वाली है।
पुलिस फोर्स ने मानवाड़ा पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लिया–
भुजंग! तुम चारों तरफ से घिर चुके हो। अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि अपने-आपको चुपचाप हमारे हवाले कर दो।
चुपचाप? अभी आत्मसमर्पण करता हूं।

और–
अरे, बाप रे!
इतनी ताकत! यकीन करना मुश्किल है!!
कूदो! जीप से कूद जाओ! और पोजीशन ले लो।
धड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़
अब मुझे न चाहते हुए भी इस पर गोली चलाने का आदेश देना पड़ेगा।
फायर!!
गोलियों की बौछार भुजंग की तरफ लपकी–
धांय
हा हा हा हा हा!
धांय
धांय
...और भुजंग के शरीर से टकरा कर बेकार हो गईं।
एक्सपेरीमेंट कामयाब रहा, मास्टर! हमारा भुजंग अजेय है।
अब यह नाटक खत्म करो, कार्लो! हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।
भुजंग, अब वहां से भाग जाओ।
आदेश भुजंग तक पहुंचा–
और भुजंग ने नाक की सीध में भागना शुरू कर दिया–
हाय

और देखते ही देखते आंखों से ओझल हो गया–
कोई भी आदमी उस का पीछा कर पाने की हालत में नहीं था–
अब ध्रुव इस घटना की खबर पाकर, घटनास्थल पर पहुंचा, तब तक स्थिति सुधर चुकी थी–
हुम! गोलियां बेअसर होने का कारण तो बुलेटप्रूफ जैकेट हो सकता है। लेकिन उसकी अमानवीय ताकत को कैसे समझा जाए?
और फिर वह भाग गया। और हम में से कोई इस लायक नहीं था कि उसको पकड़ सके।
फिर क्या हुआ?
और यह जानते हुए भी कि पूरे देश की पुलिस उसको ढूंढ रही है, वह इतना खुलेआम कैसे घूम रहा था?
कहीं ऐसा तो नहीं कि यह भुजंग हो ही नहीं? बल्कि भुजंग के वेष में और कोई आदमी हो?
हो सकता है? लेकिन इसका हमारे पास कोई सबूत नहीं है।
लेकिन हमको इतना तो पता चल गया है कि भुजंग इसी शहर में मौजूद है। हमने पूरे शहर की नाकेबंदी कर दी है।
अब वह हमसे ज्यादा समय तक नहीं बच सकता।
अपनी रात की गश्त पर निकलते समय भी ध्रुव का दिमाग इसी नई गुत्थी में उलझा हुआ था–
गुडनाइट, ध्रुव!
गुड नाइट, रेणु! अब सुबह तुम्हारी ड्यूटी खत्म होने के वक्त ही मुलाकात होगी।
अब सुजंग का पता लगाया जाए! ताकि उससे कम से कम सुपरमैन बनने का तरीका तो पता चले। मुझे भी...
अरे!
रात के दो बजे बैंक के अंदर लाइट जल रही है। यानि कुछ गड़बड़ है।
...कोई रात को बैंक से पैसा निकालने आया है।
इस समय ध्रुव को कतई आभास नहीं था कि वह मौत के मुंह में जा रहा है।

क्योंकि बैंक में घुसते ही उसकी नजर जिसपर पड़ी, वह था—
भुजंग!!
आ गए? हाहाहाहा!
बैंक में डकैती तुमको ही यहां बुलाने का एक बहाना था।
और तुम खुद चलकर मेरे पास आ गए।
अब मेरा मिशन पूरा होगा।
मिशन? कैसा मिशन?
अपना मिशन तो अब तुम खत्म ही समझो।
बेहतर यही होगा कि तुम अपने आपको मेरे हवाले कर दो।
जरूर कर दूंगा।...
अगर तू मेरे हाथों से बच गया, तो मुझे अपने आपको तेरे हवाले करना ही पड़ेगा।
लोहे की मनों वजनी सेफ ध्रुव की तरफ लपकी।
लेकिन ध्रुव की फुर्ती ने उसकी जान बचा ली—
कड़ाक
बड़ा दम है, यार, तुम में!
कौन सा टॉनिक खाते हो?
इसमें तो सुपर-मैन सी ताकत है।
यह जरूर भुजंग के मेकअप में कोई और आदमी है।
क्योंकि भुजंग को मैं अच्छी तरह से जानता हूं। और उसमें इतनी ताकत तो शर्तिया नहीं थी।
तड़
लेकिन... लेकिन इसके मुंह पर न तो कोई मास्क है, और न ही कोई मेकअप।

तो भुजंग में इतनी ताकत आखिर कहां से...
आह
बात आश्चर्यजनक थी।
लेकिन भुजंग का एक भरपूर वार ध्रुव के लिए बहुत था–
बेहोश हो गया। हाहाहाहा!!
अब मेरा मिशन पूरा होगा। हां!!
–लेकिन तभी–
उसके कानों में एक आवाज गूंजी–
नहीं, भुजंग।
इसको तो तड़पा-तड़पा कर मारना है।
अब यह थोड़ी देर के लिए हमारे रास्ते से दूर है। तुम्हारा यहां का काम खत्म हुआ।
भुजंग के लोहे जैसे कड़े, हत्यारे हाथ ध्रुव की गर्दन की ओर बढ़े–
अब तुम्हारे मिशन का दूसरा चरण शुरू होता है।
कमांडो-हैडक्वार्टर में ड्यूटी पर बैठी रेणु बोर हो रही थी–
आSSSS! ट्रॉसमीटर पर बैठना भी कितना बोरिंग काम है।
पता नहीं, करीम को यह काम कैसे अच्छा लगता है।
मुझे तो लगता है कि मैं कहीं बोरियत से मर...
धनाक
रेणु ने गर्दन मोड़ी, और उसकी आंखें आश्चर्य से फैलती चली गईं–

क्योंकि, उसके सामने भुजंग खड़ा था। और उसके भयानक चेहरे पर एक क्रूर मुस्कान खेल रही थी–
न जाने क्यों, रेणु का पूरा बदन डर से सिहर उठा।
उधर जब ध्रुव को होश आया तो आस-पास काफी भीड़ थी–
कैसा लग रहा है, ध्रुव?
मैं ठीक हूं! पर भुजंग कहां गया?
भुजंग? भुजंग इस बैंक में डकैती डालने आया था? आर यू श्योर?
पता नहीं! लेकिन यह वही आदमी था, जिससे पुलिस-फोर्स की मुलाकात हो चुकी है। क्योंकि उसकी शक्ल भुजंग की ही थी, और उसमें अमानवीय ताकत थी।
खैर! हमको उस आदमी के काफी फिंगर-प्रिंट यहां पर मिले हैं। अब हमको जल्दी ही पता चल जाएगा कि वह भुजंग है या कोई और।
एक फिंगर-प्रिंट तो तुम अपने सामने देख सकते हो।
ध्रुव की आंखों के सामने एक और आश्चर्य मौजूद था–
?
लोहे की अलमारी पर बने उंगलियों के गड्ढों में पड़े शंखनुमा निशान साफ नजर आ रहे थे।
ध्रुव को अब तक खतरे का आभास हो चुका था। लेकिन यह खतरा उसको किस तरह से घेरेगा, इस का पता ध्रुव को अभी नहीं था–
जबकि खतरा कमांडो-हेडक्वार्टर तक आ पहुंचा था–
गुड मार्निंग, रेणु! कोई मैसेज आया था क्या?
...और यह खिड़की का शीशा कैसे टूट गया?

पर रेणु जवाब देने के बजाय, कई पलों तक ध्रुव की तरफ एकटक देखती रही–
उसकी आंखें खूंखार जंगली बिल्ली की तरह चमक रही थीं।
क्या बात...?
नो मैसेज, कैप्टन ध्रुव!
रेणु के इस अजीब व्यवहार से ध्रुव कुछ चिंतित हो गया।
हैलो, रेणु! तुम तो नाइट ड्यूटी पर जरूर सोई होगी।...
–कौन सा सपना देखा?
बकवास नहीं। चार्ज लो और अपना काम करो।
अरे, आज तो यह खाने को दौड़ रही है!! रात भर भूखी रही है क्या...?
ओह!
मैंने कहा, बकवास नहीं!!
ध्रुव और पीटर, दोनों ही आश्चर्यचकित रह गए। लेकिन इससे पहले कि ध्रुव कुछ करता...
!
?
...रेणु बाहर जा चुकी थी।
बाप रे! मुझे नहीं पता था, कि रेणु देवी इतनी कस के मार सकती हैं।
आई एम सॉरी, पीटर! न जाने क्यों, रेणु आज आपे में नहीं है।
हाहाहाहा! परेशान हो रहे हो, सुपर कमांडो ध्रुव? ... अभी तो यह सिर्फ शुरुआत है। तुम्हारा तड़प तड़प के मरना तो अभी बाकी है।
लिस्ट में अगला नाम किसका है, सुंग?
कमांडो पीटर का, और इस के बाद कमांडो करीम का, मास्टर!
हम्म! हमारी स्कीम में फैमिली टच नहीं आ पा रहा है।
...ध्रुव की बहन श्वेता का। इससे बहुत बढ़िया 'फैमिली टच' आएगा मास्टर!

वैरी गुड आइडिया! लेकिन इस दुनिया से विदा करने से पहले ध्रुव से यह जरूर पूछ लेना कि अपनों के हाथों मरना कैसा लगता है?
हाहाहाहा!!
ओ गॉऽऽड! पूरे दो दांत हिल रहे हैं। कल तक तो थोबड़ा सूज कर तबला...
लो। किसी का फोन आ रहा है।
मैं देखता हूं।
हैलो! ध्रुव हियर। ... हां, सर, मैं... क्या? सचमुच!?
हां, ध्रुव! वे फिंगर-प्रिंट भुजंग के ही हैं। मेरे पास अभी-अभी रिपोर्ट आई है।
यानि भुजंग किसी तरीके से इतना शक्तिशाली हो गया है, कि उसपर काबू पाने के लिए पूरी फौज की जरूरत है।
इसीलिए उसको जल्दी से जल्दी पकड़ना और भी जरूरी हो गया है, सर! वर्ना भगवान जाने वह और कितनी जानें लेगा।
ठीक है, ध्रुव! हम अपनी तरफ से कोशिश करते हैं। तुमको अगर कुछ पता चले तो हमको तुरंत खबर करना।
ओ.के. सर!
भुजंग का पता तो जल्दी ही मिल जाएगा। क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि वह जल्दी ही मुझपर दोबारा हमला करेगा।
इसीलिए मैं खुद ही उसका काम आसान कर देता हूं।
वह भुजंग को ढूंढने निकल रहा है, मास्टर! रास्ता फिर थोड़ी देर के लिए साफ है।
तो अब शुरू होता है, हमारी स्कीम का अगला हिस्सा।
भारत में बैठे कार्लो को संदेश भेज दो।
स्टार्ट!
पीटर अब तक अपनी दाढ़ सेंक रहा था–
आऊ! इतनी भी फुर्सत नहीं है कि डॉक्टर से...।
आई एम सॉरी, पीटर!

रे..रे..रे...रेणु! अरे, तुम्हारे सॉरी कहने से दर्द कम हो जाएगा क्या? आऊ!
मैंने माफी तो मांगी न।
अब वापस क्यों आई हो? मेरे मुंह में बाकी बचे हुए तीस दांत भी तोड़ने हैं क्या?
अच्छा, चलो माफ किया। लेकिन तुम्हारा मूड एकाएक इतना खराब कैसे हो गया?
दरअसल... रात को मुझे एक बहुत खतरनाक स्थिति का सामना करना पड़ा।... और अब मेरी जिंदगी खतरे में है।
ओ माई गॉड! तुमने यह बात ध्रुव को बताई?
नहीं! ध्रुव इस मामले में मेरी कोई मदद नहीं कर सकता।...
अगर कोई मेरी जान बचा सकता है,... तो सिर्फ तुम और करीम।
लेकिन पहले पूरी बात तो समझाओ।
उसका समय नहीं है, पीटर।
अगर एक घंटे के अंदर-अंदर कुछ न किया गया तो तुम मुझे जिंदा नहीं पाओगे।
ठीक है, रेणु! अगर तुम यही समझती हो तो ऐसा ही सही। चलो, हम सीधे करीम के पास चलते हैं।
और वहां से हम तुम्हारी मुसीबत दूर करने चलेंगे।
वेरी वेरी गुड! इन दोनों का इंतजाम तो हो गया। अब हमारी लिस्ट पर सिर्फ एक नाम बचा है ...
श्वेता का—
ओफ्फो! मम्मी पापा को भी इसी समय मौसी से मिलने जाना था।
...और वह भी दो दिनों के लिए। अब मैं बैग लगाऊं, कपड़े ढूंढूं, या नाश्ता करूं। क्या कूड़ा जिंदगी है!!
सबसे अच्छा तो यही होगा, कि स्कूल गोल कर दिया...
धड़ाक

हाहाहाहा!!
क्या चाहते हो? कौन हो तुम?
हमको लोग प्यार से भुजंग कहते हैं, बिटिया! हम तुमको घुमाने ले जाने आए हैं।
अच्छा!! लेकिन हमें घुमाने वाले को पहले खुद जहन्नुम की सैर करनी पड़ती है।
एक फुट की छोकरी, और दो गज की जुबान। चल मेरे साथ।
?
भुजंग ने श्वेता की बांह पकड़ी...
..और अगले ही पल श्वेता हवा में उछल गई—
ठ्रक
दुश्मनी भइया करता है।
और भुगतना मुझे पड़ता है।
भुजंग का हवा में उड़ता बदन टेबल पर गिरा...
...और उसके टुकड़े टुकड़े हो गए।
ओह! यह आदमी है या लोहे का डला। अगर इसकी एक उंगली भी मुझसे छू गई ...
... तो मेरे कोमल बदन की तो चटनी बन जाएगी।
इसीलिए बचते-बचते बीच-बीच में इसकी धुनाई करनी भी जरूरी है।
ताकि इसको थका कर इस काबू पाया जा सके। ... लेकिन यह आदमी तो पावरहाउस लग रहा है। ...
इसपर तो थकान का नामोनिशान तक नहीं है।

आखिर ऐसे कब तक बचा…?
आाााह!
ज्ञानी कहते हैं कि अपने से ज्यादा बलवान से युद्ध करने में, शरीर को नुक्सान पहुंच सकता है।…
इसीलिए अक्लमंदी इसी में है, कि यहां से शरीर समेत भाग खड़ा हुआ जाए।
श्वेता दरवाजे की तरफ लपकी।
लेकिन भुजंग बिजली की सी तेजी से श्वेता और दरवाजे के बीच में आ गया।
श्वेता का हाथ उसको धक्का देने के लिए आगे बढ़ा—
और भुजंग की कमीज सामने से दो भागों में चिर गई।
हाथ में शर्ट का फटा टुकड़ा पकड़े श्वेता ने अपनी तरफ बढ़ती मौत को देखा, और उसकी आंखें आश्चर्य से गोल हो गईं—
सामने जो कुछ भी दिख रहा था, उसपर यकीन करना मुश्किल था।
और आधे घंटे बाद - जब भुजंग बाहर निकला तो श्वेता का बेहोश शरीर उसके कंधे पर झूल रहा था—
कहीं और पीटर और करीम, रेणु की परेशानी दूर करने जा रहे थे—
कितनी दूर और जाना है, रेणु?
बस, गाड़ी यहीं पर रोक दो।

तुम लोगों की यात्रा यहीं खत्म हुई।
ओह, समझा! तुमने आज सुबह से दूसरी बार ऐसा अजीब व्यवहार किया है, रेणु! या तुम्हारा कोई और नाम है?
हा, हा हा!
जो चाहे समझ लो।
ये...ये सब क्या चक्कर है, पीटर?
थोड़ी देर खामोश रहो, करीम! अभी सब समझ में आ जाएगा।
रेणु, आई एम सॉरी! लेकिन मैं तुमको कमांडो फोर्स की तरफ से गिरफ्तार करता हूं!
यू आर अंडर एरेस्ट!
सच? ही ही ही ही।
रेणु के चेहरे पर शैतानी हंसी एक बार फिर से खेलने लगी।
और इससे पहले कि पीटर पलक तक झपक पाता, पिस्तौल उसके हाथों से छूटकर दूर जा गिरी—
तड़
रेणु!
पागल हो गई हो क्या?
करीम!
पकड़ लो इसे।
ओ॰ के॰, पार्टनर!
दोनों रेणु की तरफ लपके।
लेकिन रेणु के हाथों ने उनको बीच में ही रोक लिया—
धाड़
पर पीटर और करीम कमांडो-फोर्स के कैडेट थे—
और हार मानना उनकी ट्रेनिंग में शामिल नहीं था।

चाहे हार निश्चित हो—
ओह!
रेणु, रुक जाओ।
वर्ना मुझे तुम पर गोली चलाने को मजबूर होना पड़ेगा।
लेकिन रेणु नहीं रुकी—
और करीम की मजबूर उंगलियां ट्रिगर पर दब गईं—
धाँय
और रेणु फिर भी नहीं रुकी—
करीम और पीटर तुरंत समझ गए कि उन की हर कोशिश अब बेकार है।
क्योंकि इस लड़ाई में सिर्फ एक ही विजयी हो सकता है—
और वह है—रेणु
उधर-जब ध्रुव कमांडो फोर्स के हेडक्वार्टर पहुंचा तो—
कमाल है। यहां तो कोई भी नहीं है। पीटर कहां चला गया?
...लगता है कि कोई बहुत जरूरी काम आ पड़ा। शायद श्वेता को कुछ बता कर गया हो।
शीघ्र ही—
लेकिन श्वेता तो स्कूल---। नहीं! घर का दरवाजा खुला है।
यानि श्वेता ने आज फिर स्कूल गोल कर दिया?

लेकिन अंदर घुसते ही ध्रुव का दिमाग चकरा गया-
यह क्या?
कमरे में चारों तरफ बिखरा और टूटा सामान इस बात की गवाही दे रहा था, कि अभी-अभी कोई तूफान इस जगह से गुजरा है-
श्वेता कहां गई?
श्वेता!
श्वेता!!
तभी- ध्रुव की चारों तरफ दौड़ती नजरें जमीन पर आ टिकीं। और उसके दिमाग में छिपा डरावना शक यकीन में बदल गया-
श्वेता की जान खतरे में थी।
और रात भर की थकान भूलकर ध्रुव एक बार फिर निकल पड़ा-
वह भुजंग को ढूंढने जा रहा है।
अगर यह ध्रुव हमारे कब्जे में आ गया, तो...
मेरा बदला भी पूरा हो जाएगा, और यह पूरा शहर भी मेरे कब्जे में आ जाएगा।
अब हमारी स्कीम के आखिरी हिस्से को पूरा करने का वक्त आ गया है।...
..और साथ ही इस छोकरे का भी आखिरी वक्त आ गया है-

ध्रुव को अपने सिर पर मंडराते खतरे का आभास तब हुआ–
जब जिंदगी और मौत के बीच सिर्फ एक पल बाकी था।
और ध्रुव ने वह निर्णायक पल नहीं गंवाया–
बचने, और तेजी से ऊपर पहुंचने का एक ही रास्ता था। और उस रास्ते को सिर्फ एक ही आदमी पार कर सकता था–
सुपर कमांडो ध्रुव!
भुजंग एक भरपूर टक्कर खाकर दूर जा गिरा–
लेकिन–
इसपर इतनी जबरदस्त टक्कर का भी कुछ खास असर नहीं हुआ!!!
इसकी जुबान खुलवाने के लिए तो काफी मेहनत करनी पड़ेगी।
श्वेता कहां है, भुजंग?
तुम्हारी प्यारी बहन? जल्दी ही जान जाओगे, बच्चे!...
...क्योंकि मैं तुमको उसी के पास भेजने जा रहा हूं।
मेरे सब्र का इम्तहान मत लो, भुजंग! मैंने आज तक किसी को जान से नहीं मारा है। लेकिन अगर तुम ने श्वेता को जरा सा भी नुकसान पहुंचाया है ...

... तो आज तुम्हारे देवता भी तुमको नहीं बचा सकते।
धाड़
हाहाहा! देवताओं के पास तो मैं तुमको पहुंचाने वाला हूं, ध्रुव!
क्योंकि यही मेरा मिशन है। मेरी जिंदगी का एकमात्र मकसद!
लेकिन जिंदगी और मौत के इस संघर्ष को, एक रहस्यमय आकृति बहुत ध्यान से देख रही थी—
जिसका आभास दोनों में से शायद किसी को नहीं था—
अपनी सारी फुर्ती और इच्छा-शक्ति के बावजूद ..
..ध्रुव को कभी न कभी भुजंग का वह वार लगना ही था, जो उसके लिए घातक सिद्ध होता—
धड़ाक
इसीलिए लड़ाई ज्यादा देर तक नहीं चली।
भुजंग ने एक हल्के से झटके से ध्रुव को हवा में उठा लिया—
ताकि वह ध्रुव के शरीर को सैकड़ों फुट नीचे कड़ी चट्टानों पर पटक सके।
अब बात हद से आगे बढ़ रही है। इसको ध्रुव की हत्या करने से रोकना ही होगा।
अगले ही पल- भुजंग ने आश्चर्यचकित ध्रुव नीचे फेंकने के बजाय, धी से जमीन पर उतार दिय

ध्रुव ने चकित होने के बावजूद यह सुनहरा मौका नहीं खोया–
क्योंकि भुजंग एकदम किनारे पर खड़ा था।
और अब गिरने की बारी उसकी थी–
यह क्या? भुजंग ने ऐसा क्यों किया?
इसकी जरा सी गलती से ध्रुव बच गया। शिट!
कोई बात नहीं।
मैं वैसे भी इस छोकरे को इस तरीके से मारना नहीं चाहता था।
क्योंकि इसको मारने वाले तो कोई और हैं...
...और वे हैं, इसके अपने लोग–
हिलना नहीं, कैप्टेन!!
ध्रुव मुड़ा...
...और उसको अपनी जिंदगी का सबसे करारा झटका लगा–
पीटर, रेणु, करीम,... और... और... श्वेता!!
तुम सब के हाथ में पिस्तौलें क्यों हैं?
य...यह सब क्या हो रहा है?
तुम सब लोग पागल हो गए हो क्या? श्वेता तू...तू...भी!?
हम तुमको तुम्हारे जुर्म की सजा देने आए हैं।
जुर्म!? मैंने कौन सा जुर्म किया है?
तुमने भुजंग पर जानलेवा हमला किया है, ध्रुव!... और भुजंग हमारा दोस्त है।
कमांडो अदालत तुम्हारे जुर्म की सजा तय कर चुकी है, भइया!

और वह सजा है...
?
सजाए-मौत!!
धाँय
धाँय
धाँय
धाँय
एक साथ चार गोलियां ध्रुव के शरीर से टकराईं–
कुछ पलों के लिए ध्रुव का आश्चर्यचकित बदन खड़ा रहा।
और फिर-लहरा कर ज़मीन पर आ गिरा–
ध्रुव को मौत की सजा मिल चुकी थी
ओफ! पल भर के लिए तो मुझे लगा कि ध्रुव मरेगा ही नहीं।
लेकिन ध्रुव ने मर कर मेरी वह घबराहट दूर कर दी। हीहीहीही।
इसी बात का जश्न कहीं और भी मनाया जा रहा था–
हाहाहाहा! मर गया। मर गया।
मेरे रास्ते का सबसे बड़ा कांटा दूर हो गया। अब मुझे कोई रोक नहीं सकता।
शाबास, मेरे गुलामो! अब इसकी लाश को उठा कर हमारे हैडक्वार्टर में ले चलो।
और फिर–
वाह! तुम लोगों ने मेरी सालों की मेहनत को सफल कर दिया।
अब... अब बॉस मुझको मालामाल कर देगा।

मैं सारी दुनिया खरीद लूंगा। ... अब मुझे मास्टर से संपर्क करके यह खुशखबरी सुनानी चाहिए।
कार्लो ने मास्टर से संपर्क करने के लिए पेनल की तरफ हाथ बढ़ाया।
और उसकी गर्दन एक शिकंजे में कस गई—
साथ ही एक सर्द आवाज उसके कानों से टकराई—
रुक जाओ, कार्लो! अब यह खेल, मेरे नियमों से खेला जाएगा। समझे?
वह सर्द आवाज कार्लो का खून जमा देने के लिए काफी थी—
क... कौन... कौन हो तुम?
जान-पहचान होने में समय लगता है, कार्लो। पहले मैं अपना काम कर लूं तो फिर तुम 'मास्टर' से संपर्क कर सकते हो।
और फिर-
कार्लो रिपोर्टिंग, म-मास्टर! ध्रुव की लाश य... यहां आ गई है।
हम जानते हैं, कार्लो! आज तुमने हमारा सपना पूरा कर दिया।
हम चौबीस घंटे के अंदर-अंदर तुम्हारे पास पहुंच जाएंगे। तब तक तुम इसकी लाश को सुरक्षित रखो।
क्योंकि इसकी चिता को हम अपने हाथों से आग लगाएंगे।
तब तक, तुम हमारे 'नए गुलाम' की टेस्टिंग शुरू कर दो।
और, हां! अब भुजंग हमारे लिए बेकार हो चुका है। अब तुम उसकी कई महीनों से सुरक्षित रखी लाश को पुलिस के हवाले कर दो।
जो आज्ञा, मास्टर मैं 'टेस्टिंग' शुरू कर देता हूं।
कार्लो ने कंट्रोल पेनल पर कुछ बटन दबाए। और एकाएक पूरे कक्ष में एक मशीनी घरघराहट गूंजने लगी—
घर्र्र्र्र्र्र

- और एक पेनल खुलने लगा-
अंदर खड़ी आकृति ने धीरे-धीरे अपनी आंखें खोलीं। उसमें जीवन का संचार हो रहा था-
वाह, कार्लो, वाह! यह तो हू-ब-हू वही है।
यह आपके आदेश का इंतजार कर रहा है, मास्टर!
इसको इसका पहला काम सौंप दो। काम हमारे वहां पहुंचने तक खत्म हो जाना चाहिए।
ओवर!
चलो! यह काम तो खत्म हो गया।
तुम...तुम आखिर (गड़ब) क्या चाह...?
तुम्हारी चुप्पी, कार्लो!
-और वह भी, सिर्फ तब तक के लिए, जब तक तुम्हारा मास्टर यहां न पहुंच जाए।
उसके बाद, अगर तुम बोल सको, तो जितना चाहो, उतना बोलना।
-और उसी रात-शहर के सबसे बड़े 'ज्वैलरी-स्टोर' के चौकीदारों के पास एक जाना-पहचाना मेहमान आया-
अरे, ध्रुव साहब, आप यहां?
मुझे खबर मिली है, कि यहां डकैती हो रही है।
ही, ही, ही। नहीं, साहब! किसी ने मजाक किया होगा।
हम तो लगातार पहरे पर ही हैं।
मैं खुद देखना चाहता हूं कि सब ठीक है या नहीं। दरवाजा खोलो।
पहले मालिक को यहां बुला लें, फिर हम दरवाजा खोल...
आह!
ओऽऽ!
फिर एक करारा वार ही उस चौकीदार को बेहोश करने के लिए काफी था।

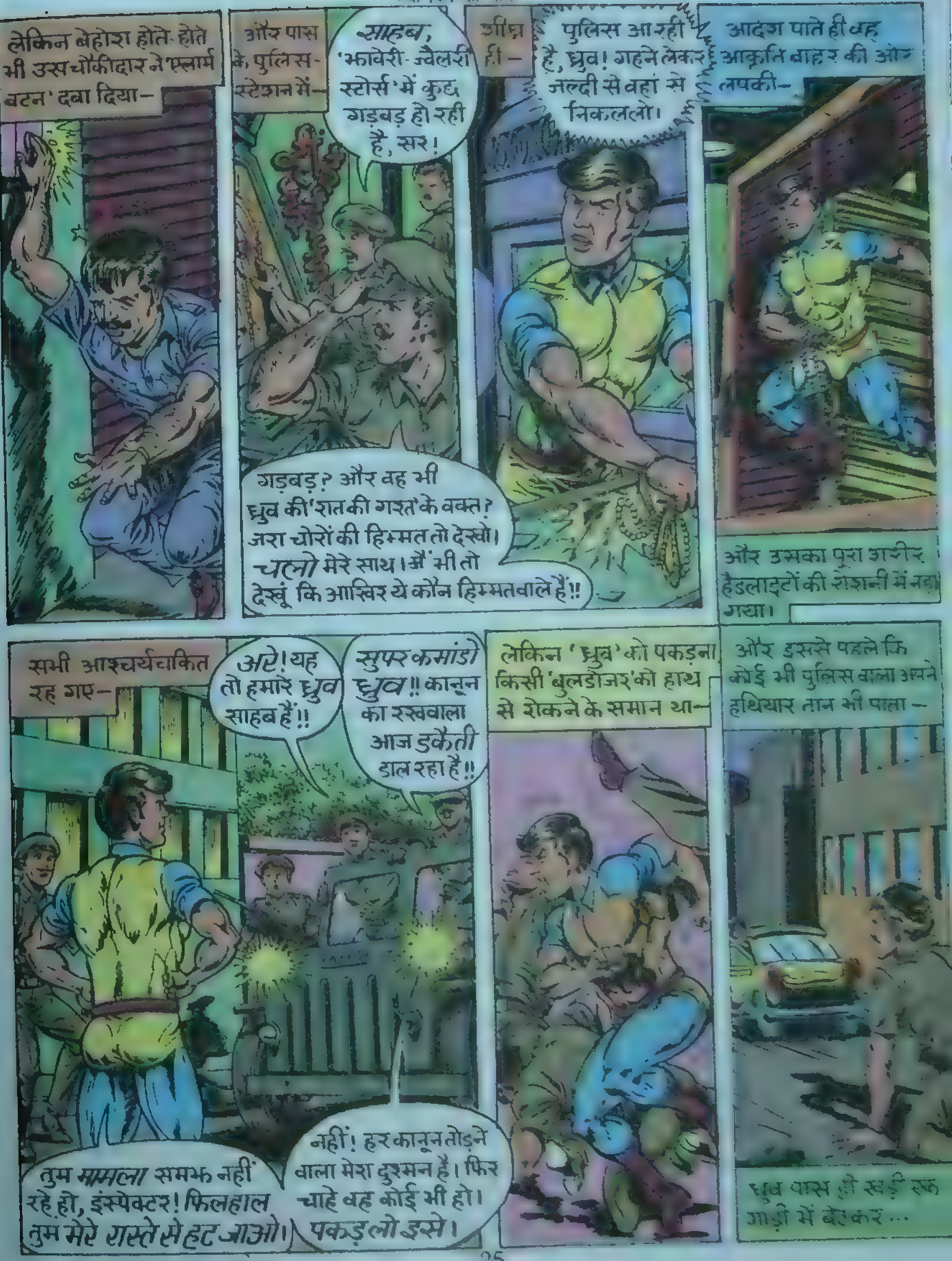
लेकिन बेहोश होते-होते भी उस चौकीदार ने 'एलार्म बटन' दबा दिया—
और पास के, पुलिस-स्टेशन में—
साहब, 'झावेरी-ज्वेलरी स्टोर्स' में कुछ गड़बड़ हो रही है, सर!
गड़बड़? और वह भी ध्रुव की 'रात की गश्त' के वक्त? जरा चोरों की हिम्मत तो देखो। चलो मेरे साथ। मैं भी तो देखूं कि आखिर ये कौन हिम्मतवाले हैं!!
शीघ्र ही—
पुलिस आ रही है, ध्रुव! गहने लेकर जल्दी से वहां से निकललो।
आदेश पाते ही वह आकृति बाहर की ओर लपकी—
और उसका पूरा शरीर हैडलाइटों की रोशनी में नहा गया।
सभी आश्चर्यचकित रह गए—
अरे! यह तो हमारे ध्रुव साहब हैं!!
सुपर कमांडो ध्रुव!! कानून का रखवाला आज डकैती डाल रहा है!!
तुम मामला समझ नहीं रहे हो, इंस्पेक्टर! फिलहाल तुम मेरे रास्ते से हट जाओ।
नहीं! हर कानून तोड़ने वाला मेरा दुश्मन है। फिर चाहे वह कोई भी हो। पकड़ लो इसे।
लेकिन 'ध्रुव' को पकड़ना किसी 'बुलडोजर' को हाथ से रोकने के समान था—
और इससे पहले कि कोई भी पुलिस वाला अपने हथियार तान भी पाता—
ध्रुव पास ही खड़ी एक गाड़ी में बैठकर...

...रात के अंधेरे में ओझल हो गया–
ध्रुव और डकैती! यकीन करना भी मुश्किल है।
यकीन काहे का साहब? आप तो जानते ही हैं कि यह सब–
शट अप, हवलदार!
और ध्रुव जब वापस अपने अड्डे पर लौटा, तो कोई उसकी अगवानी करने के लिए मौजूद था–
आओ, बहादुर, आओ। तुमने आज हमारे दिल को ठंडक पहुंचा दी।
कोई भी तुमको और तुम्हारी कमांडो फोर्स को देखकर, यह नहीं कह सकता कि तुम असली नहीं, बल्कि रोबोट हो!!
आज ग्रैंडमास्टर रोबो का सपना पूरा हुआ।... जिस छोकरे ने मेरे 'अपराध-जगत के ओलंपिक' को तबाह किया था ...*
...आज मैंने उसको तबाह और बदनाम कर दिया है।
आज से 'ध्रुव' ऐसे-ऐसे काम करेगा कि दुनिया उसपर थूकेगी।
इधर आओ, कार्लो!
ज...जी ग्रैंड-मास्टर?
हमने फैसला किया है, कि तुम्हारे इस महान आविष्कार के लिए तुमको एक इनाम दिया जाए।...
मौत का इनाम।
म...म... मौत!! क्य...क्यों, मास्टर?
तुमने आज तक हमारे प्लान को एक सीक्रेट बनाए रखा। इसलिए अब यह हमारा कर्तव्य है कि यह प्रोजेक्ट हमेशा के लिए सीक्रेट रहे।...
और इसके लिए तुम्हारी जुबान को खामोश करना बहुत जरूरी है।
मा... मास्टर, नहीं। मैं किसी से कुछ नहीं कहूंगा।
अब तुम वैसे भी किसी से कुछ नहीं कह पाओगे। हाहाहाहाहा।
लेकिन कार्लो तक पहुंच पाने से पहले ही–
यह क्या?
मेरा गुलाम मुझ पर ही हमला करता है!!
सांप ग्रैंडमास्टर के हाथ से दूर जा गिरा।

* पढ़िए 'मौत का ओलंपिक'

कार्लो, धोखेबाज! तूने जानबूझ कर ध्रुव के रोबोट के कंट्रोल अपने पास ही रखे? गद्दार!!
धोखेबाज कार्लो नहीं, तुम हो, ग्रेंडमास्टर रोबो! जो अपने आदमियों को वफादारी के बदले में मौत का इनाम देता है।
बहुत बोलते हो। यानि तुम...
मैं तुम्हारा गुलाम रोबोट नहीं हूं, रोबो! तुम्हारा गुलाम तो उधर कब्र में लेटा हुआ है।
मैं सुपर कमांडो ध्रुव हूं। और यह मेरी असली कमांडो फोर्स है। जिसका काम तुम को अब इंटरपोल के हवाले करना है।
रोबो पल भर में पूरी स्थिति समझ गया—
तो आज तुमने मुझको दूसरी बार मात दे दी, कमांडो!
लेकिन मुझे पकड़ना तुम जैसे छोटे-छोटे बच्चों का खेल नहीं है। हाहाहाहा।
न... न... न। फिर से की गलती मत करना। क्योंकि यह 'मास्टर लेसर गन' एक ही बार में तुम सब के चिथड़े एक साथ उड़ा सकती है।
अब मुझको यह बताओ कि मुझसे गलती कहां हुई?
तुम सब भुजंग से बच कैसे गए?... यह जानना मेरे लिए बहुत जरूरी है, ताकि मैं भविष्य में वही गलती दुबारा न करूं।
यह जानने के बाद मैं तुम सबकी चिता में अपने हाथों से गर्म-गर्म आग लगाऊंगा।...
फिर मुझे...
इनकी चिता की चिंता छोड़कर, अपनी कब्र की फिक्र करो, मास्टर जी!
जमीन के रेट आजकल बहुत ज्यादा बढ़ गए हैं।
कौन है रे तू, छोकरी?
इस छोकरी को तुम जैसे अपराधी चंडिका कहते हैं, रोबो।
और मेरे पास तुम्हारे सब सवालों का जवाब है।
हालांकि, कार्लो की जीनियस के बनाए रोबोटों के पिंजर ग्रिल्स तक असली जैसे थे, लेकिन यह समझना कोई बड़ा काम नहीं था, कि वे सभी रोबोट हैं।
और यह जानने के बाद, उनको काबू में करना भी आसान काम था।

जानना चाहते हो कैसे? तो देखो!
चंडिका श्वेता की तरफ लपकी।
और उसके हाथों के एक हल्के से दबाव से, श्वेता के सीने का एक हिस्सा खुल गया –
ये रहा तुम्हारा एक रोबोट, रोबो!
और इसका फ्यूज निकालते ही...
चंडिका ने कुछ बटन दबाए।
...यह बेजान हो जाएगा।
...और अब इसकी 'कंप्यूटर-प्रोग्रामिंग' बदल अपना गुलाम बनाना, बाएं हाथ का काम है।
माई गॉड! यह श्वेता नहीं है!! तो--तो श्वेता कहां गई?
घबराओ मत, ध्रुव! उसको मैंने पहले ही सुरक्षित जगह पर पहुंचा दिया है।... क्योंकि यह जगह उस जैसे डरपोक के लिए नहीं है।...
तुम्हारे भुजंग को मैंने इसी तरीके से अपने कब्जे में किया। और उसके कंप्यूटर-कंट्रोल में जरा सी हेर-फेर करने से वह तुम्हारे बजाय मेरा गुलाम बन गया।
उसके बाद पीटर, करीम, रेणु और... अ... श्वेता को आजाद कराने का काम भुजंग ने ही किया।
अब तुम्हारे सारे रोबोट कैद में हैं।... और असली कमांडो फोर्स आजाद है। ध्रुव की मौत और डकैती का नाटक सिर्फ तुमको यहां बुलाने के लिए किया गया था।
तो मेरा प्लान ध्रुव से ज्यादा तुमने बिगाड़ा है!?...
तूने ग्रैंड मास्टर रोबो का प्लान चौपट करके अपनी मौत को दावत दी है, छोकरी!
अब सबसे पहले तू मरेगी, और बाद में ये सब।
असावधान चंडिका को रोबो के हाथ का वार काफी तेज लगा।

और जब तक सभी उस की मदद को आगे बढ़ते—
धड़ाक्
एक दूसरा वार चंडिका के बदन से आ टकराया।
शेबो की इस हरकत से ध्रुव की आंखों में खून उतर आया—
मैं तुमको सही-सलामत अंतर्राष्ट्रीय पुलिस के हवाले करना चाहता था, शेबो।...
...लेकिन चंडिका पर हाथ उठाकर तुमने वह मौका गंवा दिया।
अब तुम हवालात से पहले अस्पताल में जाओगे।
तड़ाक
कमांडो फोर्स ध्रुव की मदद करने को तैयार थी।
लेकिन ध्रुव को मदद की जरूरत नहीं थी।
क्योंकि क्रोधित ध्रुव का सामना तो शायद पागल हाथी भी नहीं कर सकता था—
लेकिन क्रोध में आदमी सोचने-समझने की शक्ति खो बैठता है। इसीलिए उसको आने वाले खतरे का आभास नहीं हुआ—
धाड़
वैसे भी वह उतना कुछ नहीं जानता था, जितना कि कार्लो को पता था—
ध्रुव! ग्रैंडमास्टर का बदन गर्म हो रहा है। उससे दूर हटो।
हट जाओ!
लेकिन ये चेतावनी क्रुद्ध ध्रुव के कानों तक नहीं पहुंच रही थी।

और इससे पहले कि बहुत देर हो जाती, कार्लो आगे लपका—
?
और उसने ध्रुव को पकड़ कर—
एक तरफ धकेल दिया—
ग्रेंड मास्टर का बदन अब ट्यूब-लाइट की तरह चमक रहा था—
और अगले ही पल- एक कर्णभेदी धमाके के साथ ग्रेंडमास्टर के चिथड़े-चिथड़े हो गए—
धड़ाााा!!मम
और साथ ही साथ-सारे रोबोटों के बदन में भी धमाके होने लगे—
धड़ाक
धड़ाम
धम्मम
कुछ ही पलों में सब शांत हो गया—
यह क्या? ग्रेंडमास्टर रोबो खुद एक रोबोट था!!!
कार्लो, तुम ठीक तो हो न?
ग्रेंड मास्टर... तो कहीं दूर... बैठा है, ध्रुव! ... आह! यहां पर तो... उसने अपना रोबोट... भेजा था। ... यह बात... मुझे तब समझ... आई...
... जब मैंने... आह... उसके बदन को... चमकते देखा।
और चूंकि... इन सभी रोबटों... के कंट्रोल... इसी रोबोट ग्रेंडमास्टर... के बदन में... लगे हुए थे... आह... इसीलिए वे भी... साथ ही खत्म... हो गए।
आह! ... मुझे मेरे किए की... सजा मिल गई। ... मुझे खुशी... सिर्फ इस बात की है... कि मैं तुमको ... जिंदा बचा सका।

यह दृश्य कहीं दूर पर, कोई बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था--
इस बार तो तुम को कार्लो ने बचा लिया, छोकरे!
लेकिन अगली बार मैं तुमको जल्दी ही ऐसी जगह ले जाकर मारूंगा, जहां पर कोई पानी पिलाने वाला भी न हो।
और उधर-
कार्लो! ओह, यह तो मर गया।
हम कुछ कर भी तो नहीं सकते थे, ध्रुव!
अगर आज तुम यहां न होतीं, चंडिका, तो हम सभी मौत की नींद सो चुके होते।
मुझे तो यह सारा खेल तब समझ में आया, जब इन चारों ने मुझपर नकली गोलियां चलाईं। ... मैं उसी क्षण समझ गया, कि अब मुझको भी मरने की एक्टिंग करनी पड़ेगी।
इसके अलावा और कोई चारा था भी नहीं, ध्रुव! वर्ना हम यह कभी नहीं जान पाते कि यह सारा षड्यंत्र रचाने वाला कौन शख्स है।
लेकिन तुम इस झगड़े में कैसे फंस गईं?
बस, वैसे ही जैसे तुम फंस गए।
अब मैं तुम लोगों को यह कैसे बता सकती हूं, कि अब भुजंग की कमीज फटने पर मैंने उसकी छाती पर धातु का एक टुकड़ा लगा देखा, तो...
--मुझे तुरंत समझ में आ गया कि यह कोई आदमी नहीं, बल्कि रोबोट है। उसके बाद मेरी इलेक्ट्रॉनिक्स की जानकारी काम आई। फ्यूज निकालते ही भुजंग का मशीनी बदन बेजान हो गया।
फिर मैंने उसकी कंप्यूटर-प्रोग्रामिंग को बदलकर उसको अपना गुलाम बना लिया। वही मुझको अपने इस अड्डे तक लाया।
अड्डे के बाहर से ही मैंने भुजंग को आदेश देकर रेणु, पीटर और करीम को मुक्त करा लिया। कार्लो को इस की भनक तक नहीं लगी।
फिर मैंने श्वेता के---यानि अपने रोबोट की प्रोग्रामिंग को इस तरह से बदल दिया कि कमांडो फोर्स उसको असली समझे।
उसके बाद भइया को नकली गोलियों से मारना, और रास्ते में उसको सब कुछ समझा देना तो मामूली काम थे।
किस सोच में पड़ गई, चंडिका?
कुछ नहीं! लेकिन तुम लोग जल्दी बाहर आओ। श्वेता बाहर डरी बैठी होगी। उस बेचारी को तो यह समझ में ही नहीं आ रहा है कि ये सब क्या हो रहा है?
लेकिन तुम कहां चल दीं, चंडिका? सुनो तो...

लेकिन चंडिका–
चली गई!!
हुम्म! हम यह शायद कभी नहीं जान पाएंगे कि आखिर यह चंडिका है कौन?
और फिर बाहर–
भइया! भइया!! तुम लोग कहां चले गए थे। (सुबक) मुझे एक गंदा आदमी यहां उठा कर ले आया था।
ऊंऊंऊं! ऊंऊं!!
बस, बस! चुप हो जा। चुप हो जा।
ऊंऊंऊंऊं। (सुड़क) ऊं ऊंऊंऊं।
अरे, अब क्यों रोती है? अब तो सब ठीक हो गया न? हमने तुझे ढूंढ़ तो लिया।
मैं कल स्कूल नहीं जा पाई न। (सुबक) आज भी नहीं जा पाऊंगी। (सुबक)
टीचर मारेगी। सुबक!
अरे, नहीं मारेगी। मैं एप्लीकेशन लिख दूंगा।
लिख दूंगा, कि मेरी बहन जंगल में गुम हो गई थी। ढूंढ़ने में दो दिन लग गए।
सच! लिख दोगे न। ही ही ही।
लेकिन वह लड़की कौन थी, भइया, जिसने मुझे बचाया?
यह जानने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं, श्वेता! ...
...लेकिन मुझे शक है, कि अगर मैं उससे पूछूंगा भी तो भी वह मुझे यह रहस्य नहीं बताएगी ...
-- कि आखिर वह कौन है?
सच, आखिर वह कौन है?
समाप्त